shrIkRiShNAShTakam

श्रीकृष्णाष्टकम्

Document Information

Text title : kRRiShNAShTakam 8

File name : kRRiShNAShTakam.itx

Category : aShTaka, vishhnu, krishna, vallabhaachaarya, puShTimArgIya

Location : doc_vishhnu

Author : vallabhAchArya

Proofread by : PSA Easwaran psaeaswaran at gmail.com

Description/comments : puShTimArgIya stotraratnAkara

Latest update : May 17, 2017

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

May 31, 2020

sanskritdocuments.org

श्रीकृष्णाष्टकम्

श्रीगोपगोकुलविवर्धन नन्दसूनो
राधापते व्रजजनार्तिहरावतार ।
मित्रात्मजातटविहारण दीनबन्धो
दामोदराच्युत विभो मम देहि दास्यम् ॥ १॥

श्रीराधिकारमण माधव गोकुलेन्द्र-
सूनो यदूत्तम रमार्चितपादपद्म ।
श्रीश्रीनिवास पुरुषोत्तम विश्वमूर्ते
गोविन्द यादवपते मम देहि दास्यम् ॥ २॥

गोवर्धनोद्धरण गोकुलवल्लभाद्य
वंशोद्भटालय हरेऽखिललोकनाथ ।
श्रीवासुदेव मधुसूदन विश्वनाथ
विश्वेश गोकुलपते मम देहि दास्यम् ॥ ३॥

रासोत्सवप्रिय बलानुज सत्त्वराशे
भक्तानुकम्पितभवार्तिहराधिनाथ ।
विज्ञानधाम गुणधाम किशोरमूर्ते
सर्वेश मङ्गलतनो मम देहि दास्यम् ॥ ४॥

सद्धर्मपाल गरुडासन यादवेन्द्र
ब्रह्मण्यदेव यदुनन्दन भक्तिदान
सङ्कर्षणप्रिय कृपालय देव विष्णो
सत्यप्रतिज्ञ भगवन् मम देहि दास्यम् ॥ ५॥

गोपीजनप्रियतम क्रिययैकलभ्य
राधावरप्रिय वरेण्य शरण्यनाथा ।
आश्चर्यबाल वरदेश्वर पूर्णकाम
विद्वत्तमाश्रय विभो मम देहि दास्यम् ॥ ६॥

कन्दर्पकोटिमदहारण तीर्थकीर्त्ते
विश्वैकवन्द्य करुणार्णवतीर्थपाद ।
सर्वज्ञ सर्ववरदाश्रयकल्पवृक्ष
नारायणाखिलगुरो मम देहि दास्यम् ॥ ७॥

वृन्दावनेश्वर मुकुन्द मनोज्ञवेष
वंशीविभूषितकराम्बुज पद्मनेत्र ।
विश्वेश केशव व्रजोत्सव भक्तिवश्य
देवेश पाण्डवपते मम देहि दास्यम् ॥ ८॥

श्रीकृष्णस्तवरत्नमष्टकमिदं सर्वार्थदं शृण्वतां
भक्तानां च प्रियं हरेश्च नितरां यो वै पठेत्पावनम् ।
तस्यासौ व्रजराजसूनुरतुलां भक्तिं स्वपादाम्बुजे
सत्सेव्ये प्रददाति गोकुलपतिः श्रीराधिकावल्लभः ॥ ९॥

॥ इति श्रीमद्वल्लभाचार्यविरचितं श्रीकृष्णाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

Proofread by PSA Easwaran psaeaswaran at gmail.com

shrIkRiShNAShTakam
pdf was typeset on May 31, 2020

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*